Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II
on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

October 2019 Special Issue- 20 Vol. II

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श
Indian Society & Ideology of Disability

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Associate Editor
Dr. S.A. Wadchkar

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX, Vol. II Octomber 2019	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

निशि उपाध्याय

36. भारतीय समाज और विकलांग विमर्श के संदर्भ में प्रस्तुत शोधालेख 'विकलांगता और मनोविज्ञान' के उपलक्ष्य में नाटक 'बिन बाती के दिप' — 145
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी

37. विकलांग विमर्श — 148
प्रा.खाडे विद्या बाबूराव

38. विकलांग विमर्श स्वरूप एवं अवधारणा — 151
डॉ.शेख शहेनाज अहेमद

39. विकलांग विमर्श : 'महादेवी वर्मा की कहानियाँ अलोपी और गुंगिया' — 154
प्रा. डॉ. शे. रज़िया शहेनाज़ शे. अब्दुला

40. **विकलांग विमर्श और हिंदी साहित्य** — 159
वाघमारे विकास सुर्यकांत

41. **सोशल मीडिया रिपोर्टिंग का सवाल** — 162
डॉ. वडचकर एस.ए.

42. **'आपका बंटी' उपन्यास में मनोवैज्ञानिक चिन्तन** — 165
[redacted]

43. **'कुर्सी पहियोंवाली' में विकलांग की समस्याएँ : एक चिंतन** — 168
डॉ. सतीश वाघमारे

44. भारतीय सहित्य और समाज में विकलांग विमर्श — 171
प्रा.डॉ.येल्लूरे एम.ए.

45. विकलांगता और कथासाहित्य — 176
देशमुख शहेनाज अ. रफिक

46. **विकलांग विमर्श को स्वर देता हिंदी काव्य विश्व** — 180
डॉ. श्वेता चौधारे

47. समकालीन हिन्दी कहानियों में विकलांग विमर्श — 186
डॉ.निम्मी ए.ए

48. **हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग चरित्र** — 190
डॉ.कांचनमाला बाहेती

49. **विकलांगता एक परिचय** — 193
प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटिल

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

CURRENT GLOBAL REVIEWER 168

Special Issue XX, Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

'आपका बंटी' उपन्यास में मनोवैज्ञानिक चिन्तन

[redacted]
हिन्दी विभागाध्यक्ष, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली.

हमारा वर्तमान समय एक ओर विसंगति और विडंबनाओं से भरा है तो दूसरी ओर अनेक वैज्ञानिक अविष्कार, अनुसंधान एवं तकनिकी कौशलों तथा महान उपलब्धियों से संपन्न है। यह वह समय है जब विकलांगता को मात देने के लिए हमारे पास अच्छे उपचार, उपकरण एवं संसाधनों की भरमार हैं। विकलांगता एक अनामंत्रीत घटना है। यह जन्मजात भी हो सकती है और दुर्घटना के कारण भी। प्राचिण समय में दुर्घटनाएं कंदमुल, फल–ग्रहण अथवा शिकार के दौरान होती थी। वर्तमान समय में आवागमन के साधनों एवं कारखानों से दुर्घटनाग्रस्त का शिकार हो रहें हैं। पहले उपचार के साधन पर्याप्त नहीं थे किन्तु दया, सहानुभूति जतानेवालों की कमी नहीं थी। आज वैज्ञानिक खोजों एवं चिकित्सकीय सुविधाओं से उपचार सर्वसुलभ हुआ है किन्तु भागमभाग और आर्थिक लोलुपता के कारण दुर्घटनाग्रस्त को समय देनेवालों की कमी हो रहीं है। आज आत्मीय दुर्घटनाग्रस्त मानव भी बोझ लगने लगा है। तब उसपर यह लगता है कि ईश्वर यदि किसी से कुछ छीनता है तो उसके बदले में कुछ और प्रदान कर देता है। जो व्यक्ति उस दौर को पहचानता है उसका जीवन सहज तथा सुगम हो जाता है। उसकी निःशक्तता, सशक्तता में बदल जाती है। जो वर्ग 'बेचारा' कहलाने का दंश झेलने के लिए विवश है, उसे प्रेरित–प्रोत्साहित कर सशक्त बनाने की दिशा में विकलांग–विमर्श एक सार्थक पहल है।

शारीरिक अथवा मानसिक अक्षमता विकलांगता है। इससे मानवी मन में निराशा उत्पन्न होती है। हीनता का भाव भरता है। फलतः मानव में एकल वत्ति का बढना, हीनता की वृत्ति, असंतोषी एवं विद्रोही बनकर अकर्मण्य एवं आलसी हो जाता है।

'आपका बंटी' मन्नुजी का स्वतंत्र लघु उपन्यास है, जो सन् 1971 में प्रकाशित हुआ था। इसमें पारिवारिक विसंगति के शिकार पति–पत्नि के एक मात्र पुत्र बंटी को केंद्र बनाकर उसके समुचे मानसिक संसार का मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में शकुन जैसी एक सुशिक्षित एवं आधुनिक नारी के प्रचण्ड 'अह' से आक्रांत व्यक्तित्व से है और दूसरी का सम्बन्ध विवाह–विच्छेद माता–पिता की सन्तान बंटी की जटील से जटील होती जा रहीं मानसिकता से है। 'आपका बंटी' उपन्यास में जो मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तथ्य उभरकर आए है, वे एक घर की पारिवारिक समस्या में सिमटकर भी आधुनिक जीवन की त्रासदी बन गये हैं। हिन्दी उपन्यास एक अर्न्तयात्रा में डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा है–".....मन्नु भंडारी ने 'आपका बंटी' में तलाकशुदा पति–पत्नी के प्रश्न को बच्चे की समस्या के बिन्दु से उठाया है। यह एक नया प्रश्न है।"[1]

मन्नु भंडारी की रचनाओं के पात्र इतने जीवंत होते है कि पढने पर लगने लगता है कि इनसे तो कहीं परिचय हो चुका है। अधिकतर पात्र वास्तविकता से भरे जीवंत लगते है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'आपका बंटी' उपन्यास है। इस उपन्यास के केन्द्रिय पात्र बंटी और शकुन है। अजय तो परोक्ष में रहता

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

है। बंटी के जीवन का केन्द्र शकुन है। बंटी उसके साथ रहता है। बंटी का नाम अरुपबन्ना है पर वह पुरे उपन्यास में बंटी के नाम से ही व्याप्त है। बंटी के जीवन का नियामक पात्र उसकी मॉ शकुन है। शकुन के हर निर्णय का, हर गतिविविधी का परिणाम बंटी भोगता है। बंटी के जीवन का नियामक पात्र है शकुन। सारा उपन्यास केन्द्रित है आठ साल के बंटी पर। आरम्भ में बंटी के पास अपना घर है, अपना बगीचा है, अपनी मम्मी शकुन है अपनी फुफी है, पापा साथ नहीं रहते लेकिन पापा का असीम प्यार हर समय उसके साथ रहता है। उनके दिए खिलोने है। पर कुछ ही दिनों में कैसे उसके हाथ से सारी चीजें एक-एक कर सम्बन्ध हीन बनते चले जाते है। अन्य बच्चों के समान उसे भी अपने मम्मी पापा से गहरा प्रभाव लगाव है। वह चाहता है कि दोनों साथ साथ रहें। शकुन प्रिंसिपल है, उसका एक स्वतंत्र व्यक्तित्व भी है, उसका समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान भी है। शकुन का हर प्रयत्न अजय को निचे दिखाने का होता है। शकुन विभागाध्यक्ष से प्रिन्सिपल भी इसी उद्येश्य से बनती है। वह बंटी के माध्यम से अजय को तडपाना चाहती है। शकुन का व्यक्तित्व दो टुकडों में बटा है। एक तो वह स्वतंत्र नारी और दूसरा मातृत्व का। शकुन घर में मॉ है– त्याग, सेवा एवं स्नेह की देवि, किन्तु कॉलेज में प्रिंसिपल है– कर्तव्य एवं नौकरी के प्रति समर्पित निष्ठा की प्रतिमुर्ति। इसी कारण बंटी को अपनी मॉ में सदैव दुहरा व्यक्तित्व दिखाई देता है। वह सोचता है– ''मम्मी के पास जरुर एक और चेहरा है। चेहरा ही नहीं आवाज भी कैसी सख्त होती जा रहीं है। बोलती है तो लगता है जैसे दाट रहीं हों।''[2] अपनी उम्र के आगे सोचने वाला बंटी, फुफी को विज्ञान की बाते समझाने वाला बंटी स्कुल के प्रवेश परीक्षा में उत्तिर्ण नहीं हो पाता है। माता पिता के अलगाव कें परिणाम स्वरुप मानसिक तनाव से एक स्वस्थ बच्चे की हालत कैसी हो जाती है। इसका यथार्थ चित्रन बंटी के चरित्र में पाया जाता है।

मन्नु भंडारी ने प्रस्तुत उपन्यास में शहर में रहने वाले पढे लिखे नौकरपेशा वर्ग की अपनी महत्वकांक्षाओं अपेक्षाओं, अंतर्द्वन्द तथा तनावों से जूझती नारी का चित्रण हैं तथा अधिकार की भावना के थोपे अर्हताद में पीडित मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी नारी पुरुषों के सम्बन्धों के खोकले पन को व्यक्त करने का प्रयास किया है। शकुन और अजय के भीतर ही चलने वाली एक अजीब सी अहंवाद की लढाई के कारण दोनों में सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। पुत्र बंटी की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पडता है। परिस्थितियों से विवश बंटी का व्यवहार विक्षिप्त सा हो जाता है। मम्मी पापा के झगडों को लेकर जब उसके मित्र वह बच्चे अपने से अधिक भाग्यशाली लगने लगते है, जो अपने माता–पिता के साथ रहते हैं। मित्र टीटू द्वारा पुछे जाने पर कि ''क्यों रे बंटी तेरा मन नहीं होता कि पापा तेरे साथ रहे....जब यहॉ आतें हैं तो तू कहता क्यों नहीं? पर अब वह शायद साथ रह नहीं सकते, तेरे मम्मी पापा में तलाक जो हो गया है।''[3] बंटी यह सुनकर भीतर ही भीतर अपने को अपमानित महसुस करता है और अपनी हीन भावना को दबाने के लिए हवा में ही बन्दुक चलाना शुरु कर देता है।

बंटी के पिता दूसरा विवाह मीरा नामक लडकी से कर लेते है। अजय की नयी जिन्दगी की शुरुवात को सुन शकुन की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पडा है। उसे दुख है कि वह उसे पराजित नहीं कर सकी। ''यहां सम्बन्ध विच्छेद की घटना मुख्य नहीं है बल्कि आधुनिक जीवन के अहम्वादी दृष्टिकोण की निरर्थकता का ही एक मनोवैज्ञानिक अयाम है।''[4]

T.C.
Asst. Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli